अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) कौनसा संस्वेदज जीव है-
(क) पतंगा (ख) जूँ
(ग) चमगादड़ (घ) टिड्डी (ख)

(b) पृथ्वीकाय का प्रकार नहीं है-
(क) सोना (ख) हीरा
(ग) अभ्रक (घ) धूँअर (घ)

(c) दया से पूर्व क्या आवश्यक है-
(क) विनय (ख) व्रत
(ग) ज्ञान (घ) तीनों ही (ग)

(d) आभ्यन्तर तथा बाह्य संयोगों को छोड़ने का फल है-
(क) संवर धर्म का स्पर्श (ख) अणगार वृत्ति
(ग) कर्मक्षय (घ) केवलज्ञान (ख)

(e) केवलज्ञानी जानता है-
(क)लोक को (ख) अलोक को
(ग)लोकालोक को (घ) सिर्फ स्व-आत्मा को (ग)

(f) सबसे पहले केवली निरोध करता है-
(क) श्वासोच्छ्वास (ख) काययोग का
(ग) वचन योग का (घ) मनोयोग का (घ)

(g) पाँचवीं नारकी से सातवीं नारकी की उत्कृष्ट अवगाहना है-
(क) दुगनी (ख) चार गुनी
(ग) आठ गुनी (घ) समान (ख)

(h) भवनपति देवी की जघन्य स्थिति है-
(क) देशोन दस हजार वर्ष (ख) दस हजार वर्ष
(ग) दस हजार वर्ष झाझेरा (घ) आधा पल्योपम (ख)

(i) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय लब्धि का प्रयोग करे तो उसकी उत्कृष्ट अवगाहना होती है-
(क)पृथक्त्व सौ योजन (ख) पृथक्त्व हजार योजन
(ग) एक लाख योजन (घ) एक लाख योजन झाझेरा (क)

(j) 56 अन्तर्द्वीपज मनुष्य होते हैं-
(क) मिथ्यादृष्टि (ख) सम्यग्दृष्टि
(ग) मिश्रदृष्टि (घ) इनमें से कोई एक दृष्टि वाले (क)

(k) अवसर्पिणी काल में गर्भज मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना होती है-
(क) एक गाउ (ख) दो गाउ
(ग) तीन गाउ (घ) 500 धनुष (ग)

(l) 'वीरस्तुति' किस सूत्र में वर्णित है-
(क) समवायांग सूत्र (ख) आचारांग सूत्र
(ग) सूत्रकृतांग सूत्र (घ) औपपातिक सूत्र (ग)

(m) 'वीर स्तुति' में प्रभु महावीर को कहा गया है-
(क) खेदज्ञ (ख) कुशल
(ग) आशुप्रज्ञ (घ) तीनों ही (घ)

(n) उत्कृष्ट चारित्र-आराधना का फल है-
(क) क्षायिक सम्यक्त्व (ख) सामायिक चारित्र

(ग) उपशम श्रेणि (घ) क्षीण वीतरागता (घ)

(o) उत्कृष्ट दर्शन-आराधना में ज्ञान की आराधना होती है-
(क) जघन्य (ख) मध्यम
(ग) उत्कृष्ट (घ) तीनों प्रकार की (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) अंगार के सूक्ष्म कण में अनन्त जीव हैं। (नहीं)
(b) थैली से उत्पन्न होने वाले जीव जरायुज कहलाते हैं। (नहीं)
(c) जो साधु सुख की इच्छा वाला है, उसकी सुगति सुलभ है। (नहीं)
(d) संयम-धर्म के पालन के लिए जीव को जानना आवश्यक है, अजीव को नहीं। (नहीं)
(e) अयतना से सोने में जीव की हिंसा नहीं होती है। (नहीं)
(f) भूत की हिंसा नहीं करना भी धर्म है। (हाँ)
(g) ज्योतिषी देवों की जघन्य स्थिति पल्योपम का आठवाँ भाग है। (हाँ)
(h) स्थावर जीव वैक्रिय शरीर नहीं बनाते हैं। (नहीं)
(i) सन्नी जलचर की उत्कृष्ट अवगाहना असन्नी जलचर की उत्कृष्ट अवगाहना के समान है। (हाँ)
(j) युगलिक मनुष्यों में सभी संहनन मिलते हैं। (नहीं)
(k) अनन्तानुबन्धी कषाय जीवन पर्यन्त रह सकती है। (हाँ)
(l) भगवान महावीर अनियत आचारी नहीं थे। (नहीं)
(m) सभी समुद्रों में स्वयम्भूरमण समुद्र प्रधान है। (हाँ)
(n) सभी धर्मो में निर्वाण श्रेष्ठ है। (हाँ)
(o) एक बार आराधक हो जाय तो जीव 15 भव तक आराधक ही रहता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	सातवीं नारकी	(क) 12 योजन	33 सागरोपम
(b)	सिद्ध भगवान	(ख) तीन पल्योपम	सादि अनन्त
(c)	दर्शन आराधना	(ग) एक हाथ	क्षयोपशम सम्यक्त्व
(d)	वनस्पतिकायिक जीव	(घ) शक्ति	10000 वर्ष
(e)	ज्ञान आराधना	(च) 33 सागरोपम	केवल दर्शन
(f)	अनुत्तर विमानवासी देव	(छ) वैक्रिय समुद्रघात	एक हाथ
(g)	प्राण	(ज) 10000 वर्ष	शक्ति
(h)	द्वीन्द्रिय	(झ) सादि अनन्त	12 योजन
(i)	युगलिक	(य) क्षयोपशम सम्यक्त्व	तीन पल्योपम
(j)	वायुकायिक जीव	(र) केवल दर्शन	वैक्रिय समुद्रघात

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं आने वाले कर्मों को आत्मा के साथ चिपका देती हूँ। लेश्या
(b) मैं सामान्य रूप से वस्तु के स्वरूप को जानता हूँ। दर्शन
(c) मुझमें नील और कृष्ण, ये दो लेश्या मिलती हैं। पाँचवीं नारकी/5वीं नारकी के नैरिये/रिट्ठा/धूम
(d) वैक्रिय करने पर मेरी उत्कृष्ट अवगाहना एक लाख योजन झाझेरी हो सकती है। गर्भज मनुष्य/5 कर्मभूमिज मनुष्य पर्याप्त
(e) मेरी जघन्य अवगाहना उत्कृष्ट से देशऊणी होती है। युगलिक मनुष्य
(f) हम अशरीरी हैं। सिद्ध भगवान
(g) ज्योतिषी देवों में हमारी स्थिति अधिकतम है। चन्द्र विमानवासी देव
(h) मेरे सद्भाव से जीव जीवित रहता है। प्राण

(i) मैं प्रीति का नाश करता हूँ। क्रोध

(j) मैं यथाख्यात चारित्र प्राप्त नहीं होने देता। संज्वलन कषाय/1/2 चौक

(k) मान-विजय से मेरी प्राप्ति होती है। विनय

(l) मैं सर्वगुणों का विनाशक हूँ। लोभ

(m) हम ऐसे एकान्त सम्यग्दृष्टि देव हैं जिनमें वैक्रिय लब्धि हैं, किन्तु प्रयोग नहीं करते। पाँच अनुत्तर विमानवासी देव/सर्वार्थसिद्धेय

(n) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 42000 वर्ष की है। असन्नी भुजपरिसर्प/असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(o) मेरे दो भेद हैं- समोहया, असमोहया। मरण

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2=(18)**

(a) 'न आमुसिज्जा.....न पयाविज्जा।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।
न आमुसिज्जा, न संफुसिज्जा, न आविलिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा,न पयाविज्जा।

(b) 'पढमं.....सेयपावगं।।' गाथा को पूर्ण कीजिए।
पढ़म नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काही, किं वा नाहीइ सेयपावगं।।

(c) 'जया कम्मं.....हवइ सासओ।।' गाथा को पूर्ण कीजिए।
जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ।।

(d) तीन विकलेन्द्रिय की दण्डक की अपेक्षा गति-आगति लिखिए।
दस दण्डक से आवे और दस दण्डक में जावे-दस दण्डक औदारिक के ।

(e) माया-विजय का कोई एक लाभ लिखिए।
नोटः- इनमें से कोई एक मान्य
1.माया विजय से सरलता आती है। 2. माया-वेदनीय का बंध नहीं होता
3. पूर्वबद्ध माया की निर्जरा होती है।

(f) कहं च नाणं.....जहाणिसंतं।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
कहं च नाणं कहं दंसणं से, सील कहं नायसुयस्स आसी।
जाणासि णं भिक्खु! जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहाणिसंतं।।

(g) दाणाण सेट्ठं.....नायपुत्ते।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।
तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते।।

(h) कोहं च माणं.....न कारवेइ।। गाथा को पूर्ण कीजिए।
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभ चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पावं ण कारवेइ।।

(i) उत्कृष्ट ज्ञान-आराधना में दर्शन एवं चारित्र आराधना कैसी होती है ?
उत्कृष्ट ज्ञान-आराधना में उत्कृष्ट अथवा मध्यम दर्शनाराधना होती है एवं उत्कृष्ट ज्ञान-आराधना में चारित्र आराधना उत्कृष्ट या मध्यम होती है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3=(27)**

(a) जया संवर मुक्किट्ठं.....कडं।। गाथा का भावार्थ लिखिए।
जब साधक उत्कृष्ट संवर-धर्म को प्राप्त कर लेता है, तब कर्मों के रज को धुनकर अलग कर देता है-यानी नष्ट कर देता है।

(b) इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं.....विहरामि। का अर्थ लिखिए।

इस प्रकार से पाँच महाव्रत और छठे रात्रि भोजन विरमण को आत्मा के हितार्थ स्वीकार करके विचरण करता हूँ।

(c) से भिक्खू वा.....जागर माणे वा। का अर्थ लिखिए।

वह साधु अथवा साध्वी जो संयत विरत पापकर्म का हनन करने वाला तथा भविष्य काल में पाप का त्यागी, दिन में, रात में, एकाकी अथवा सभा में सोये या जागृत दशा में।

(d) न गच्छिज्जा.....न तुअट्टाविज्जा। का अर्थ लिखिए।

चले नहीं, खड़ा न रहे, बैठे नहीं, सोवे नहीं।

(e) प्रत्याख्यानावरण क्रोध को स्पष्ट कीजिए।

इस क्रोध का काल उत्कृष्ट चार मास पर्यन्त बताया गया है। इसके कारण साधुपने को प्राप्त नहीं किया जा सकता। ऐसा व्यक्ति मरकर मनुष्य गति का अधिकारी होता है। इसको बालू रेत में खींची गई रेखा से उपमित किया गया है, जिसे थोड़े से प्रयत्न से पाटना आसान है।

(f) खेयन्ने से .....धिइं च पेहि।। इस गाथा में भगवान महावीर के लिए प्रयुक्त विशेषणों के अर्थ लिखिए।

भगवान महावीर खेदज्ञ (सभी प्राणियों के दुःख के ज्ञाता) अथवा क्षेत्रज्ञ (सम्पूर्ण क्षेत्र के ज्ञाता) एवं कुशल (कर्म को काटने में निपुण) महर्षि थे। वे अनन्तज्ञानी एवं अनन्तदर्शी थे। वे यशस्वी थे एवं भव्यजीवों के चक्षु पथ में स्थित थे। तुम उनके धैर्य धर्म को जानों देखो तथा विचरो।

(g) अणुत्तरं.....सुक्कं।। इस गाथा में प्रयुक्त भगवान महावीर के ध्यान की विशेषताएँ लिखिए।

भगवान महावीर स्वामी सर्वोत्तम धर्म बताकर, सर्वोत्तम ध्यान ध्याते थे। उनका ध्यान अत्यन्त शुक्ल वस्तु के समान, जल के फेन के समान दोष रहित शुक्ल था तथा शंख और चन्द्रमा के समान शुद्ध था।

(h) सोच्चा.....आगमिस्संति। इस गाथा में धर्मश्रवण एवं उस पर श्रद्धा का फल क्या बताया है ?

अरिहंत देव द्वारा कहे हुए युक्ति संगत तथा शुद्ध अर्थ और पद वाले धर्म को सुनकर जो जीव इसमें श्रद्धा करते हैं वे मोक्ष को प्राप्त करते हैं अथवा देवताओं के अधिपति इन्द्र बनते हैं।

(i) मध्यम ज्ञान-दर्शन-चारित्र आराधना का फल लिखिए।

मध्यम ज्ञान-दर्शन और चारित्र आराधना वाले कतिपय जीव जघन्य दो भव ग्रहण करके उत्कृष्टतः तीसरे भव में (बीच में दो भव देवों के करके) अवश्य मोक्ष में जाते हैं अर्थात् दो भव वैमानिक के तथा तीन भव मनुष्य के, इस प्रकार कुल 5 भव करके तो वह जीव मोक्ष में जाता ही है।

अथवा

मध्यम ज्ञान आराधना-	4 ज्ञान की प्राप्ति
मध्यम दर्शन आराधना-	सयोपशम व उपशम समकित
मध्यम चारित्र आराधना-	सामायिक आदि 5 चारित्र की प्राप्ति